[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी
एवं
सामाजिक विज्ञान
पत्रिका)

www.gejournal.net

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

E-mail: hindires@gmail.com

Volume 6, ISSUE 1, (January-March, 2018) Impact Factor: 4.807
[ISSN: 2348 - 2605]

"हिन्दी उपन्यासों में नैतिकता का वैयक्तिक प्रतिमान : प्रेम बोध"

डॉ. अमनदीप कौर

शोधार्थी

प्रेम की नैतिकता सामाजिक संरचना पर ही आधारित रहती है। नैतिक मूल्यों के पीछे जीवन की एक तर्कपूर्ण पद्धति होती है जो समाज के मानसिक रूप को ध्यान में रखकर निर्मित होती है। नैतिक मूल्य पूर्णतः सामाजिक मूल्य होते हैं जबकि प्रेम एक वैयक्तिक मूल्य है। वैयक्तिक विद्रोह से परिचालित प्रेम नैतिकता को चुनौती देता है। प्रेम की रोमांटिक संवेदना में आत्म–दंभ या आत्म–पीडन से समकालीन उपन्यासों में निर्वासन और उससे उत्पन्न निरर्थकता से प्रेम प्रसंगों को जांचा गया है।

'अन्धेरे बंद कमरे' के हरबंस और मधुसूदन अपने भीतर एक अभाव एवं शून्य का अनुभव करते हैं। आधुनिक मनुष्य की अतिरिक्त स्व–चेतनता में पडे हुए हरबंस और नीलिमा अपनी–अपनी वैयक्तिकता के कारण एक दूसरे के प्रति प्रेम और घृणा उगलते हैं। इसी से वे प्रेम की यन्त्रणा भोगने को अभिशप्त है – "प्रेम में स्थिरता तथा स्थायित्व लाने के लिए विशाल हृदय ही नहीं, विशाल मस्तिष्क भी चाहिए"।[1] प्रेम धारणा के विडम्बनात्मक पहलू को वैयक्तिक स्तर पर व्यक्त करता हुआ हरबंस लिखता है – "जीवन की सबसे बडी विडम्बना यही है कि हर व्यक्तित्व अपनी जगह सही है और वास्तविक संघर्ष सही और गलत के बीच न होकर सही के बीच होता है।"[2] सुषमा के प्रेम को ठुकराकर मधुसूदन का ठकुराइन की बेटी निम्मा के यहाँ जाने का निर्णय आधुनिक मनुष्य की वैयक्तिक विषम आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

'बूंद और समुद्र' में सज्जन–वनकन्या, महिपाल–डा. शीला के सम्बन्धों को प्रेम धरातल पर स्वीकार करते हुए समस्त परिवर्तनों को उसकी परम्परा से निकाला गया है। वनकन्या अपने प्रेमी सज्जन से प्रेम करने पर भी विवाह–पूर्व शरीर इसलिए नहीं सौपती कि – "प्रेम में यद्यपि शरीर और मन एक दूसरे के पूरक होते हैं लेकिन स्त्री शरीर सौंपकर मां बनती है।"[3] डा. शीला के साथ महिपाल के प्रेम को वनकन्या अनाचार नहीं मानती जबकि प्रेम की आड में व्यभिचार से आतंकित होना उसकी वैयक्तिकता का प्रतीक है।

समलैंगिक यौनाचारों में डूबी 'मछली मरी हुई' में डा. रघुवंश, कल्याणी से विवाह करने पर पूर्व इतिहास जानकर निष्कर्ष निकालते हैं कि निर्मल पद्मावत को कल्याणी की पुत्री अथार्त प्रिया ही नार्मल कर

---

[1] अन्धेरे बन्द कमरे पृ. 73
[2] वही पृ. 82
[3] बूंद और समुद्र पृ. 205

सकती है। निर्मल पदमावत का प्रिया को अपनी ताकत दिखाकर नार्मल होना, उसका मनोवैज्ञानिक धरातल पर विकृत यौनाचार सार्थक है, जो नैतिक भी है। इसके अतिरिक्त शीरी का भी नार्मल होकर सुबह मांग में सिन्दूर भरते हुए गुनगुनाना 'नीली मछली मरी हुई जो उठा है सूखी पडी नदी में जल भर आया है'। पहली बार एक मरी हुई मछली के शरीर में एक स्त्री प्रकट होती है।"[4] यौनाचारों की सार्थक अभिव्यक्ति है।

रेणु के 'मैला आँचल' की धार्मिक रूढ़ियों से ग्रस्त और विकृत वासनाओं की शिकार लक्ष्मी कोठारिन अवदमित यौनाकांक्षाओं से बाल्देव के प्रति समर्पित होती है। इसके अतिरिक्त 'नदी के द्वीप की रेखा', 'सूरजमुखी अन्धेरे की' की रती 'वे दिन' की 'रायना' इत्यादि नारियां प्रेम सम्बन्धों के परिवर्तित स्वरूप एवं यौन वर्जनाओं के प्रतिरोध से मूल्य चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

'उखडे हुए लोग' का शरद आदर्शवादी व्याख्याओं की वकालत न करता हुआ वर्तमान जीवन में प्रेम को प्रयोग के रूप में जीता है – "मैंने तो प्रेम को एक बहुत ही स्वाभाविक रूप में ग्रहण किया है।" जीवन में समव्यस्क स्त्री–पुरूष को एक दूसरे के पूरक और प्रेरक के रूप में जितना महत्व दिया जाना चाहिए था, उससे जरा भी अतिरिक्त महत्व मैंने नहीं दिया"।[5]

'शह और मात' का अजय इस सम्बन्ध में विचार करता है – "आज का प्रेम बहुत अधिक व्यापारी हो गया है। उसमें हमेशा एक द्विविधा, एक धर्म संकट, ऊपर से दिखावटी और भीतर से बहुत ही हिसाबीपन, साथ ही अपनी ही इस मनोवृत्ति पर ग्लानि, सब कुछ मिलाकर शायद यह आज के प्रेम की तस्वीर है।[6]

सामाजिक मर्यादाओं को अस्वीकार करते हुए 'पथ की खोज' के आर्दशवादी चन्द्रनाथ का व्यक्तिवाद लोकाचार की चिंता नहीं करता। इसीलिए पत्नी की सखी साधना की ओर वह उन्मुख होता है। हरिषंकर प्रेम को भौतिक मानता हुआ चन्द्रनाथ से कहता है – "स्त्री पुरूष का सम्बन्ध शारीरिक सम्बन्ध है – शुद्ध भौतिक। उसका रोमांस, ड्रामा सब शरीर तक ही सिमित है। प्रेम कोई अभौतिक वस्तु है, ऐसा मैं नहीं मानता। स्त्री–पुरूषों में जो एक दूसरे के प्रति आकर्षण और भूख है, उसी का प्रशंसावाचक नाम प्रेम है।[7]

समाज द्वारा परिभाषित मानवता की खिल्ली उडाता हुआ 'अजय की डायरी' के अजय का वक्तव्य है – "मैं मानवता को नहीं जानता। मैं सिर्फ व्यक्ति को पहचानता हूँ। मानवता झूठ है, धोखा है, छलावा है।

[4] मछली मरी हुई पृ 163
[5] उखडे हुए लोग, पृ 276
[6] शह और मात, पृ 88
[7] पथ की खोज पृ. 6

मानवता समाज है – निमर्म, निरूद्वेग निष्ठुर। मानवता और समाज मुझे उस सबसे वंचित रखना चाहते हैं जो मेरे मानव की ऊर्ध्वगति के लिए जरूरी है।"[8]

रमेश बक्षी के 'बैसाखियों वाली इमारत' का नायक 'प्रेम को आऊट आफ डेट और प्राचीन संस्कृति प्रधान परम्परा युक्त मुर्खता'[9] मानता है। इसीलिए पत्नी के अतिरिक्त वसुधा से भी अधिक प्रेम न बढ़ाकर मिस जासय से ही सम्बन्ध रखता है। विवाह परम्परा के प्रति चिढ़ने का भाव रखती हुई मिस जायस कहती है – "मैं प्यार–मुहब्बत में बिलकुल विश्वास नहीं करती। मैं ऐसी पहचान चाहती हूँ जिसका भूत–भविष्य कुछ भी नहीं हो। कटे हुए लोग कहीं मिल जायें और मिलकर किसी भी दिशा में खो जायें। मैं इसी को आदर्श मानती हूं।[10] विवाह को मात्रा भावी बच्चे को अपने नाम देने निमित स्वीकार करना इस परम्परागत मूल्य के प्रति प्रश्नचिन्ह लगाता है।"

'रूपा जीवा' में रूपा के माध्यम से नारी ने पहली बार मां होकर चिन्तन किया है। "वह पहली बार लडी है अपने अधम से, अपनी कुत्सा से, वह मथी गई है अपने आपसे और जीवन को अनुभूत किया है।"[11] नियोग द्वारा पुत्रवती रूपा, पुत्र द्वारा मां रूप में स्वीकृत होकर प्रकाशवती हो उठती है। मां बनने की उत्कट लालसा से स्त्री का पति से अन्येतर सम्बन्धों की यौन–परिकल्पनाओं को तार्किक बौध्दिक आधार पर समर्थन की स्थिति है।

पति से अतृप्त कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' की मित्रो का जेठानी, देवरानी और सास–ससुर को कहनी–अनकहनी कहना यथार्थ एवं स्वाभाविक है। 'दरियारी नार' जरनैली नार जैसे विशेषणों से विभूषित मित्रो मुंहफट है। अन्ततः अपनी देह की प्यास बुझाने डिप्टी बग्धे के कमरे की ओर बढते हुए नैतिक अधिकार के प्रति सचेत होना कि कहीं उसकी मां उसके पति के साथ ....। कटुता से भरती हुई उसके संस्कार जागते हैं। उसका सतीत्व स्पष्ट विरोध करता है – "सिद्ध भैरी की चेली खाली कढ़ाही में मेरी और मेरे खसम की मछली तलेगी ऐसा नहीं होगा।[12] यौन संदर्भों में वैयक्तिक प्रतिमानों की विस्फोटक स्थिति है।

आधुनिक बुद्धिवादी धारणाओं के अनुसार नैतिकता अपने सही अर्थ में एक आन्तरिक ईमानदारी है। हिन्दी उपन्यासों में इसी सन्दर्भ में प्रेम धारणाओं की अभिव्यक्ति मिली है।

---

[8] अजय की डायरी पृ. 255
[9] बैसाखियों वाली इमारत पृ. 10
[10] बैसाखियों वाली इमारत पृ. 66
[11] रूपा जीवा पृ 367
[12] मित्रों मरजानी पृ. 111